बिखेरते हैं, और यहां के बांशिदों को जोडते हैं प्रकृति से, तभी तो भोपाल को झीलों की नगरी के नाम से भी जाना जाता है। ये दस तालाब ये हैं जिनकी व्यवस्था नगर निगम भोपाल द्वारा की जाती है अन्यथा शहर के तालाब पोखरों की संख्या इनसे कहीं ज्यादा है ।

एशिया की सबसे बडी झील कहा जाने वाला भोपाल का बडा तालाब । जिसके बारे में कहावत भी मशहूर है "ताल तो ताल भोपाल ताल, बाकी सब तलैया !" बडे तालाब के निर्माण की कथा भी कम रोचक नहीं है, कहा जाता है कि एक बार राजा भोज को कुष्ठ रोग हो गया था वैद्य, हकीमों की दवाईयों से भी जब उनकी बीमारी दूर नहीं हुई तब एक संत महात्मा ने उन्हें कहा कि यदि वे भारत की सबसे बडी झील का निर्माण करवाकर उसमें स्नान करेंगे तो वे रोगमुक्त हो जाएंगे । राजा भोज ने आनन फानन में करीब 3000 हेक्टेयर के विशाल भू-भाग पर इस झील का निर्माण करवाया । अब यह तो नहीं पता कि वे इस झील में स्नान कर वे रोग मुक्त हुए अथवा नहीं लेकिन आज भी यह झील भोपाल के सौन्दर्य को बनाने और बढाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है । इसके एक तट पर भोजपुर का विशाल शिव मंदिर था तो दूसरा किनारा मिलता था सीहोर की कोलांस नदी से । इस विशाल झील में छोटे-छोटे द्वीप भी बने थे । कालान्तर में भोपाल पर देशी-विदेशी आक्रमण होते रहे, लेकिन यह झील बहती रही, इठलाती, बलखाती अविरल । लंबे समय तक भोपाल ही नहीं बल्कि आसपास के क्षेत्रों की प्यास बुझाने वाले बडे तालाब पर आज भी राजधानी की 40 प्रतिशत आबादी निर्भर है । नगर का यही एकमात्र तालाब है जिसका पानी पीने योग्य है । इसका विकास पर्यटन की दृष्टि से किया गया है तभी तो भोपालवासी अपने इस तालाब पर गर्व करते हैं ।

बडे तालाब के लगभग समकालिक है छोटा तालाब । इस तालाब के निर्माण के संबंध में मतैक्य नहीं है । कुछ इतिहासकारों का मानना है कि यह तालाब भी राजा भोज ने बनवाया था, लेकिन कुछ लोगों का कहना है कि इसका निर्माण छोटे खाँ नामक वजीर ने

अव्यवस्था का शिकार होकर अपना मौलिक स्वरूप खोते रहे हैं । मानवीय हस्तक्षेप के चलते गन्दगी, प्रदूषण के कारण इनका क्षेत्र सिकुडता चला गया । लेकिन केन्द्र और राज्य सरकार द्वारा ढेरों योजनाएं बनाकर इन तालाबों की खूबसूरती बरकरार रखने की पहल की गई, जिसमें नगर की जनता ने भी बढ चढकर हिस्सा लिया । इनकी सफाई कार्य लगातार

जारी है । कभी मोती से पारदर्शी, साफ, स्वच्छ पानी के लिए पहचाने जाने वाले मोतिया तालाब का निर्माण साहित्य, संस्कृति और कलाप्रेमी शाहजहाँ बेगम ने सन् 1819 में करवाया था । ताजुल मसाजिद से लगे इस तालाब को नमाज के पहले किए जाने वाले बुजु के लिए बनवाया गया था । इसके एक ओर विशालकाय मस्जिद तो दूसरी ओर बेगम का शाही आवास ताजमहल था । चाँदनी रात में ताजमहल का खूबसूरत अक्स इस तालाब के पारदर्शी पानी में हुबहू उतरता था । लेकिन अब न तो वैसा ताजमहल ही रहा और न ही तालाब में रहा मोती सा साफ पानी । नगर की आबादी बढी, प्रकृति से छेडछाड बढी और यह तालाब मात्र धोबीघाट बनकर रह गया, और तो और लोगों ने तालाब में ही अतिक्रमण शुरू कर दिया । 1.89 हे. में फैल यह तालाब लंबे समय तक दुरावस्था का

सिद्दीकहसन ने करवाया था । जिसका क्षेत्र 1.0 हेक्टेयर है । कभी इसके साफ सुथरे पानी में कमल खिला करते थे, लेकिन धीरे-धीरे लोगों ने इस तालाब पर ही अतिक्रमण कर लिया और यहाँ दुकाने और मकानों का निर्माण शुरू कर दिया । बीच के तालाब के दूसरी ओर स्थित है । मुन्शी हुसैन खाँ तालाब । इस तालाब को भी नवाबी शासन के दौरान

रियासत के प्रशासनिक अधिकारी मुन्शी हुसैन खाँ ने बनवाया था । उन्हीं के नाम पर इस तालाब का नाम भी पडा । इसके एक ओर लाल पत्थरों से बनी मस्जिद बनी है। जिसके किनारे पर कभी फलों से लदे बाग हुआ करते थे । बीच के तालाब की जल निकासी मुन्शी हुसैन तालाब में हुआ करती थी और यहां का पानी फिर छोटे तालाब में जाता था । इन तालाबों पर लोगों ने पक्के मकान, दुकाने खडी कर ली । धीरे-धीरे ये तालाब अपना मूल स्वरूप खोते चले गए । आसपास कचरे का ढेर लगा है । निश्चित ही इन तमाम तालाब का निर्माण काफी सोच-विचारकर योजनाबद्ध तरीके से करवाया गया था । ये तालाब साक्षी है तात्कालिक राज-व्यवस्था निर्माण कार्यो के । कालान्तर में राज-पाठ बदला, सरकारें बदली और बढती गई शहर की आबादी भी । धीरे-धीरे भोपाल के आसपास के क्षेत्र भी

काम भी यहाँ किया जाता है । झील के आसपास राजधानी परियोजना ने खूबसूरत बगीचा निर्मित कर दिया है । निश्चित ही यह झील नए भोपाल की खूबसूरती में इजाफा करती है । इसी प्रकार चार इमली क्षेत्र में 1.2 हेक्टेयर पर बनी झील भी आते-जाते लोगों का ध्यान खींचती है । झील में खिले कमल के खूबसूरत फूल भी इसका सौन्दर्य बढाते हैं । इस झील में भी आसपास का वर्षा जल और नालों का पानी एकत्रित होता है । इस झील के आसपास की राजधानी परियोजना द्वारा बगीचा निर्मित किया गया है, लेकिन हाल ही में विकसित हुई यह झील अव्यवस्थाओं का शिकार हो रही है, इसके आसपास गन्दगी बिखरी पडी है । इसी प्राकर बी.एच.ई.एल. क्षेत्र में बनी छोटी सी झील है सारंगपानी । 4.2 हेक्टेयर क्षेत्र में बनी इस झील का रखरखाव का जिम्मा बी.एच.ई.एल. के पास है । 1984 में निर्मित इस झील में भी आसपास के नालों का पानी आकर मिलता है । मुख्य रूप से सिंचाई के लिए बनाई गई हताई खेडा झील लंबे समय तक नगर निगम- सीमा से बाहर थी । सिंचाई विभाग के अधीन आने वाली इस झील का प्रयोग अब भी आसपास के ग्रामीण इलाकों में सिंचाई सुविधा के लिए किया जाता है । इसी प्रकार लहारपुर क्षेत्र में स्थित लहारपुर झील का प्रयोग भी सिंचाई के लिए किया जाता रहा है । अब इन झीलों का रखरखाव का जिम्मा नगर निगम भोपाल पर है । इन तालाबों का पानी हालांकि पीने योग्य नहीं है, लेकिन छोटा तालाब और हताईखेडा का पानी अपेक्षाकृत रूप से स्वच्छ है । जिसे भविष्य में शुद्ध करके उपयोग में लिया जा सकता है । बहरहाल इन तमाम तालाबों का पानी पीने योग्य भले ही ना हो लेकिन ये हमारे नगर का सौन्दर्य बढाने के साथ-साथ, पर्यावरण प्रदूषण कम करने और प्राकृतिक संतुलन बनाने में अहम भूमिका निभाते हैं । लेकिन इन तालाबों को सहजने और संभालने की जरूरत है, जिसके लिए सरकारी प्रयास के साथ-साथ जरूरी है आम जनता के सहयोग की ।

—वीणा सबलोक पाठक

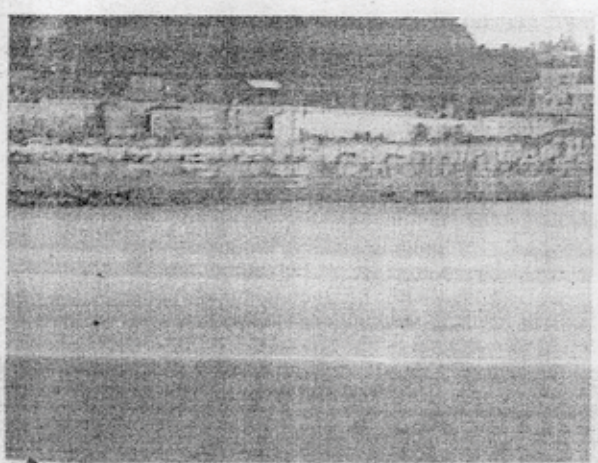

"झीलों ने भोपाल को देश मे ही नही विदेशो मे भी अलग पहचान दी है। बाहर तो कुछ लोग भोपाल को बडे तालाब के नाम से ही पहचानते हैं। यदि हमें अपने शहर की पहचान को बरकरार रखना है तो सरकार के साथ-साथ जनता को भी इसके लिए आगे आना होगा । जिस तरह बडे तालाब की सफाई के लिए सबने मिलजुल कर प्रयास किए थे, उसी तरह अन्य झीलों को भी संरक्षित करना होगा ।

—डॉ. प्रतिभा राजगोपाल
(संचालक म.प्र. महिला संसाधन केन्द्र प्रशासन अकादमी)"

भोपाल की झीलों पर एक नजर

झील	क्षेत्र	निर्माण का वर्ष	वर्तमान स्थिति	
बडा तालाब	-	3000 हेक्टेयर	11वीं शताब्दी	पीने के लिए, मछली पालन
छोटा तालाब	-	129 हेक्टेयर	1794	प्राकृतिक सौन्दर्य
शाहपुरा झील	-	96 हेक्टेयर	1974-75	मछलीपालन
मोतिया तालाब	-	1.89 हेक्टेयर	19 वी शताब्दी मे	धुलाई एवं निस्तार
सिद्दिक हसन तालाब	-	1.0 हेक्टेयर	1886	अतिक्रमण
मुशी हुसैन तालाब	-	1.2 हेक्टेयर	1886	-- -मछली पालन
सारंग पानी	-	4.2 हेक्टेयर	1964	प्राकृतिक सौन्दर्य
लहारपुर	-	35 हेक्टेयर	-	सिंचाई
हताईखेडा	-	113 हेक्टेयर	1964	सिंचाई
चार इमली	-	12 हेक्टेयर	1975	प्राकृतिक सौन्दर्य

बड़ी झील पर एक नजर

निर्माण	-	राजा भोज द्वारा
जलग्रहण क्षमता	-	361 वर्ग कि.मी.
जल विस्तार क्षेत्र	-	31 वर्ग कि.मी.
प्यास बुझाती ह	-	40 प्रतिशत आबादी की
प्रदूषित करने वाले सीवेज नाले	-	14
बरसाती नाले	-	9
सीवेज मिलता है	-	150 लीटर रोजाना